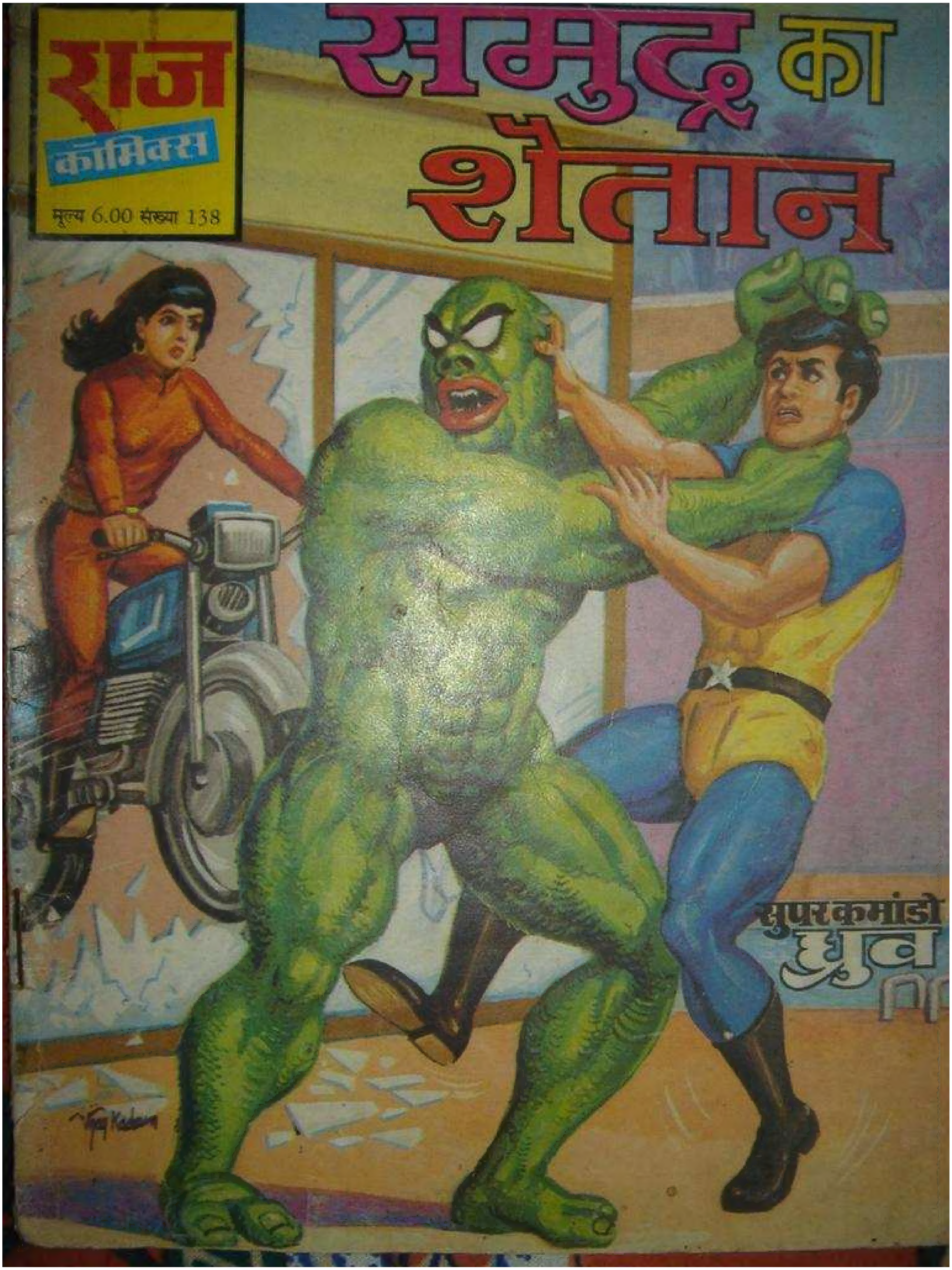
राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 138
समुद्र का शैतान
सुपर कमांडो ध्रुव

सुपर कमांडो ध्रुव

समुद्र का शैतान

कथा एवं चित्रांकन - अनुपम सिन्हा

संपादक - मनीष चंद्र गुप्त

वाकई, रीता डार्लिंग! लेकिन तुमसे ज्यादा खूबसूरत नहीं।
अच्छा, अच्छा! अब खामख्वाह की चापलूसी मत करो।...
जल्दी-जल्दी कपड़े बदलो! नहाना है या नहीं?
हम लोगों को जल्दी घर भी पहुंचना है।
ये चांद, ये सागर और तुम!
जल्दी किस गधे को है?
सच कहा! गधों को जल्दी नहीं होती।
आहा! रात के वक्त समुद्र में नहाने का मजा बयान नहीं किया जा सकता।
अब जल्दी नहीं है?
क्यों होगी? अब मजा जो आ रहा है।
और तभी-
रीता! रीता!!
गड़ब
पवन को समझते देर नहीं लगी कि रीता को किसी समुद्री जानवर ने पानी के नीचे घसीट लिया है -
पानी की सतह समुद्री झाग और बुलबुलों से भर गई।
फिर बुलबुले भी फूटने लगे और भयभीत पवन की आंखों के सामने सतह पर कुछ उभरने लगा -
वह 'कुछ' था - रीता की लाश!

पवन ने चिल्लाना चाहा, लेकिन उसके गले से आवाज गायब हो चुकी थी। और तभी एक और वस्तु सतह पर उभरी–
य... अ... गग ग... ह...
उसको देखकर पवन का दिमाग आतंक से भर गया। वह सब कुछ भूलकर किनारे की ओर लपका –
लेकिन डर से उसके पैर मनों भारी हो गए थे। उससे ठीक से भागा भी नहीं जा सका–
उसके पीछे लगी भयावह और विशालकाय आकृति क्रमशः पास आती जा रही थी –
अब शायद पवन की जिंदगी के क्षण भी खत्म हो चुके थे–
आऽऽऽऽऽऽऽ ऽ!
चट्टानों के पीछे से एक खून जमा देने वाली चीख उभरी।
और धीरे-धीरे उस चीख की प्रतिध्वनि भी हवा में घुल गई–
अब सिर्फ पानी में किसी के तैरने की आवाज सुनाई पड़ रही थी–
छप छप छप छप
और वह भी क्रमशः तट से दूर होती जा रही थी।

अगले दिन सुबह—उस सुनसान तट पर लोगों की भीड़ जमा थी—
पुलिस को न तो इनकी हत्या का कारण पता चल रहा है ध्रुव, और न ही कातिल के बारे में कोई सबूत मिल रहा है।...
...इसीलिए मैंने सोचा कि लाशों को यहाँ से हटाने के पहले तुमको भी घटना-स्थल का मुआइना करा दिया जाए। शायद तुम ही ऐसा कोई सूत्र ढूंढ निकालो जो इस दर्दनाक केस को सुलझा सके।
ध्रुव की तेज नजरें चारों ओर घूम रही थीं, और उसका चेहरा गंभीर होता जा रहा था।
इस वक्त तो मैं सिर्फ इतना ही बता सकता हूं कि हत्यारा कोई ऐसा भयानक समुद्री जीव लगता है जो पैरों पर खड़ा हो सकता है और जिस में आश्चर्यजनक ताकत है।
क्या? तुम मजाक कर रहे हो क्या?
बिल्कुल भी नहीं! देखिए, सर! इस युवती की मौत, जाहिर है, पानी में डूब कर हुई है। लेकिन इसके दाएं पैर पर खरोंचों के निशान बताते हैं कि पानी के नीचे से किसी समुद्री जानवर ने इसको पैर से पकड़कर पानी में नीचे घसीटा था।
चलो! तुम कहते हो तो मान लेते हैं, लेकिन 'भयानक' और 'पैर'...
वह समुद्री जीव भयानक अवश्य रहा होगा, क्योंकि उसको देखकर इस युवक ने डरकर भागने की कोशिश की।... अब रेत पर पैरों के निशानों को देखिए!...
युवक के पैरों के साथ-साथ चप्पू जैसे पंजों के निशान भी हैं।...
...यानि उस जीव ने इसका पीछा अपने पैरों पर चल कर ही किया। अब आगे देखिए।...
...युवक की लाश के पास युवक के पैरों के निशान गायब हैं और पंजों के निशान और गहरे हो गए हैं ...
इतना तो मैं भी देख रहा हूं। पर इससे क्या?

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समुद्री जीव ने इस युवक को गर्दन से पकड़कर हवा में उठा लिया जिससे युवक का दम घुट गया।
...इससे यह भी जाहिर है कि उस जीव में आश्चर्यजनक ताकत रही होगी।
हुम्म! ... सबूत तो तुम्हारी कहानी में फिट बैठते हैं, ध्रुव! लेकिन तुम्हारी भयानक समुद्री जीव वाली थ्योरी मेरे गले नहीं उतरती।
जहां तक मैं जानता हूं, ऐसा कोई समुद्री जीव होता ही नहीं है।
मेरे ख्याल से इनकी हत्या के पीछे कुछ और राज है। और मैं उसका पर्दाफाश करके ही रहूंगा।
ध्रुव ने इस वक्त चुप रहना ही बेहतर समझा
क्योंकि उसको अपनी बात साबित करने के लिए कुछ और सबूतों की जरूरत थी। और उसी शाम उस मनहूस तट से कुछ ही कि॰मी॰ दूर –
मछुआरों की बस्ती में –
सच है, साहिब! सवा सोला आना सच! रह तो हम हियां पर दसियन साल से रहे हैं, लेकिन अइसा जनावर हमने पिछले तीन सालों में दुई बार देखा है। हमरे तीन मछुवारों को मार भी चुका है, ससुरा!
तो तुमने पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं करी?
का फायदा है, बाबू? वो पाताललोक का प्राणी है! हमरी पुलिस-उलिस उसे छू भी नहीं सकती।...
...एही बात हम परोफेसर पाटिल से भी कहे थे, साहब!
मशहूर समुद्र-शास्त्री प्रोफेसर पाटिल!?
हां, साहिब! वो रहा उनका बंगला।... अब हम जाएं, साहिब? बहुत काम पड़ा है!
हां, हां! जाओ, भाई! बहुत-बहुत धन्यवाद!
मशहूर समुद्र शास्त्री प्रोफेसर पी॰ पी॰ पाटिल का बंगला यहां पर!! इसको कहते हैं किस्मत! ... अगर इस केस में कोई मेरी मदद कर सकता है तो सिर्फ...
प्रो॰ पी॰ पी॰ पाटिल!

कुछ ही देर बाद ध्रुव प्रो॰ पाटिल के बंगले में खड़ा था।
प्रो॰ पाटिल घर पर हैं?
आपका नाम, सर?
मेरा नाम ध्रुव है!...
इसको देखकर तो कोई इस घर में घुसने की सोचता भी नहीं होगा।
सर, कोई मि॰ ध्रुव आपसे मिलना चाहते हैं। कहें तो...
गधे कहीं के! तुमने उसको अंदर कैसे आने दिया? तुम जानते हो कि मैं शाम के वक्त सुबह का अखबार पढ़ता हूं।
अपने मि॰ ध्रुव को उठाकर बाहर फेंक दो।
लेकिन ध्रुव जहां अपनी मर्जी से आता था, वहां से वह अपनी मर्जी से ही वापस जाता था–
आTTTSS!!
मुझे खेद है, प्रो॰ साहब कि मुझे आपके घर में आकर आपके नौकर के साथ बदसलूकी करनी पड़ी। मुझे आपसे, एक गंभीर समस्या के हल के लिए कुछ सवाल पूछने हैं। अगर आप मेरी मदद कर सकें तो मैं आपका अत्यंत आभारी होऊंगा। मेरा नाम सुपर कमांडो ध्रुव...
सुपर कमांडो ध्रुव!!
ऑफ कोर्स! वही मैं सोच रहा था कि मैंने तुमको पहले कहां देखा है? अब याद आया कि मैंने तुम्हारी फोटो कई बार अखबारों में देखी है।...
...लेकिन एकदम से सामने देखकर मैं तुमको पहचान नहीं पाया।...
...यू नो? मैं तुम्हारा बहुत बड़ा फैन हूं। प्रशंसक!
पर तुम खड़े क्यों हो?

और शीघ्र ही प्रो० पाटिल ध्रुव से ऐसे बात कर रहे थे, मानो वे दोनों बरसों पुराने दोस्त हों –
बिलकुल नहीं! ऐसा कोई जीव संभव ही नहीं है। मैंने भी जब इस क्षेत्र में ऐसे समुद्री जीव के बारे में सुना तो मैंने पूरी गहराई से छानबीन की।
लेकिन नतीजा शून्य निकला।
पर वे पंजों के निशान?
वे निशान बड़ी चिड़िया के पंजों के भी हो सकते हैं! ऐसी चिड़ियां अक्सर मछलियों की तलाश में समुद्र तट पर आती रहती हैं।
और वे हत्याएं किसने कीं?
मेरे ख्याल से उन दोनों ने आत्महत्या की है। खैर, मैं कोई तुम्हारी तरह अपराध विशेषज्ञ तो हूं नहीं। ...
...पर यह पक्का है कि ऐसे किसी समुद्री जीव का अस्तित्व संभव ही नहीं है।
थैंक्यू, प्रोफेसर! अब मैं चलूंगा।
अच्छा! फिर जरूर आना, ध्रुव! गुडलक!
मछुआरे कहते हैं कि उन्होंने ऐसा प्राणी देखा है। और प्रो० पाटिल के हिसाब से ऐसा प्राणी संभव ही नहीं है। ... दोनों में से सही कौन है?
यह पता लगाने का एक ही तरीका है।
...और वह तरीका आजमाने का सही वक्त आज ही है।
और उसी रात - एक और किशोर जोड़ा उस सुनसान तट पर तन्हाई का आनंद उठाने के लिए मौजूद था –
लेकिन उनका मकसद कुछ और था।
अपने वाटरप्रूफ इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को एक बार फिर चैक कर लो, पीटर!
चिंता मत करो, रेणु! मैं उनको पहले ही दो बार चैक कर चुका हूं।
शीघ्र ही–
मैंने अपने पैर में लगे राडार के सिग्नल चालू कर दिए हैं। अब अगर कोई भी जीव हमारी तरफ बढ़ेगा तो हमें तुरंत पता चल जाएगा।
मेरी पिस्तौल भी हर आफत का मुकाबला करने के लिए तैयार है।

पानी में छपछपाहट की आवाजें अनसुनी नहीं गईं
रेणु, कोई विशालकाय जीव हमारी तरफ बढ़ रहा है। किनारे की ओर भागने के लिए तैयार रहो।
भागो!
किनारे पर पहुंचकर पीटर और रेणु क्षणभर को पलटे, और उनकी सांसें गले में ही थम गईं –
?
!
एक विशाल एवं खूंखार समुद्री जीव, जिसकी भयानकता का वर्णन करना असंभव था –
बिजली की तेजी से उन दोनों के पीछे लपका आ रहा था।
रेणु और पीटर कमांडो फोर्स के कैडेट थे –
भागकर उनको पकड़ पाना समुद्री दैत्य के भी बस के बाहर की बात थी।
पीटर और रेणु के आंखों से ओझल होते ही दैत्य भी रुक गया। उसके गले से गुस्से भरी एक हुंकार निकली–
गर्रर्र!
फिर वह मुड़ा और पलटकर चट्टानों के बीच बनी एक गुफा की तरफ बढ़ने लगा।
उसके गुफा में घुसने के साथ ही, सुनसान तट पर एक ओर उगी जंगली झाड़ियां अपने आप हवा में उठने लगीं –
तो मछुआरे सही कहते थे और प्रो० पाटिल गलत।
ऐसा जीव है! ··· मेरे प्लान का पहला भाग तो सफल रहा! रेणु और पीटर को चारे के रूप में इस्तेमाल करके, मैं इस समुद्री राक्षस को तट तक तो खींच लाया।

अब देखना यह है कि यह असली है या फिर खाल पहने हुए कोई दैत्याकार आदमी!
ध्रुव सधे हुए कदमों से गुफा के अंदर घुसा
यहां तो बहुत अंधेरा है। कोई आवाज तक नहीं आ रही है! लगता है वह दैत्य और अंदर...
और इससे पहले कि ध्रुव की आंखें अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हो पातीं–
एक शिकंजा उसके बदन पर आकर कस गया–
लेकिन ध्रुव के तेज दांतों ने उसको लगभग तुरंत ही आजाद करा दिया–
गुलाबी खून!!
ध्रुव ने तुरत ही पलट-कर वार किया। क्योंकि इस वक्त हमला ही सब से अच्छा बचाव था।
दांत काटने से एक बात तो साफ हो गई कि यह असली है!
लेकिन–
इसपर तो मेरे सबसे तगड़े घूंसों का भी कोई असर नहीं हो रहा है!
..अगर इस वक्त मैं पल भर के लिए भी चूका...
तो मेरा भी हाल उस लाश... अक!
अब बाजी ध्रुव के हाथों से निकल चुकी थी–

लेकिन तभी अंधेरे में जैसे आशा की एक किरण जगमगा उठी –
हिंसक रूप से ध्रुव को मार रहा दैत्य पलभर के लिए लड़खड़ाया।
और ध्रुव ने अपना पैंतरा बदल लिया।
यह हुम्फ कमजोर पड़ रहा है।
यानि पानी से ज्यादा देर हुम्फ बाहर रहने पर इसकी ताकत हुम्फ क्रमशः खत्म होती जाती है।
अपनी बची-खुची ताकत समेटकर ध्रुव वापस अपने दुश्मन पर टूट पड़ा –
अब मेरी हुम्फ ताकत भी मेरा हुम्फ साथ छोड़ रही है। अगर हुम्फ जल्दी ही...
लेकिन अब तक समुद्री दैत्य भी समझ गया था कि जितनी देर तक वह यहां रुकेगा, उसके पकड़े जाने की संभावना उतनी ही बढ़ती जाएगी –
?
वह पलटकर गुफा के अंदर की तरफ भागा।
थकान से हांफ रहा ध्रुव भी उसके पीछे कमजोर कदमों से लपका –
यह बाहर जाने के बजाय अंदर क्यों ... अ?
लेकिन अंधेरे में लड़खड़ाते कदमों से भागने का जो परिणाम हो सकता है, वही हुआ।
ध्रुव का सिर एक उभरी चट्टान से टकराया और उसके दिमाग पर धीरे-धीरे अंधेरे की चादर छाने लगी –
इसी बीच–
ध्रुव के प्लान में सिर्फ यही एक खराबी थी कि उसने हमसे सचमुच में भाग जाने को कहा था।
उसका सोचना एकदम ठीक था, पीटर! अगर उस दैत्य को पलभर के लिए भी शक हो जाता तो वह पानी से कभी बाहर न आता।
लेकिन अब आठ मिनट बीत चुके हैं! अब हमको प्लान के मुताबिक वापस उसी जगह पहुंच जाना चाहिए।
यू आर राइट! जल्दी आओ!

गुफा में जब ध्रुव की आंखें खुलीं –
ध्रुव! ध्रुव!! तुम ठीक तो हो?
रेणु! पीटर!! लेकिन वह समुद्री दैत्य कहां है?
पता नहीं!
जब हम तुम्हारे पैरों के निशान देखते हुए यहां तक आए तो यहां पर तुम्हारे अलावा और कोई नहीं था।
वह अंदर की तरफ भागा था।
आओ मेरे साथ।
संभल कर आना, पीटर! पता नहीं आगे क्याSSSSS...
तभी जमीन एकदम से चिकनी हो गई –
–और ध्रुव नीचे आ गिरा।
ओह! ध्रुव!? हमको टॉर्च लेकर आना चाहिए था, पीटर!
मुझे क्या पता था कि हमको गुफा के अंदर घुसना पड़ेगा। पर घबराओ मत।
मेरे पास माचिस है!
मैं ठीक हूं, रेणु! यहां पर कोई झील बनी हुई है। इसीलिए मेरा पैर किनारे पर जमी काई पर से फिसल गया।
मैं ऊपर आ रहा हूं!
जब ध्रुव संभल कर ऊपर आया तो उसके हाथ में कुछ था।
यह क्या है? मछली! हा हा हा।..
हां, रेणु! यह एक खास किस्म की मछली है।
जो सिर्फ इसी सुनसान तट के समुद्र में ही पाई जाती है।
वो तो समझी! लेकिन इससे दैत्य का क्या संबंध?
इस मछली का इस झील में होना यह साबित करता है कि कोई भूमिगत सुरंग इस झील को समुद्र से जोड़ती है।
और वह समुद्री दैत्य इसी सुरंग द्वारा वापस समुद्र में भाग गया है।
पर वह इस गुफा में आया ही क्यों?

कुछ लेने। इधर देखो। जमीन पर एक चौकोर गीला निशान।...
यहां पर पानी से निकाल कर कुछ रखा गया था। शायद कोई बॉक्स।...
...और वह राक्षस यहां पर इसी बॉक्स को लेने आया था।
पर समुद्री जीव का बॉक्स से क्या काम?
ये सारी बातें एक ही ओर इशारा करती हैं, पीटर, कि राक्षस की आड़ में कोई खतरनाक और गैरकानूनी खेल खेला जा रहा है।
और जो लोग यह खेल, खेल रहे हैं, उनके लिए किसी की जान लेना बाएं हाथ का खेल है।
और फिर-अगले दिन सुबह-
मैंने न केवल उस राक्षस को अपनी आंखों से देखा है, सर, बल्कि उससे दो-दो हाथ भी किए हैं।...
S. P. CITY
हुम्म!... तो इन सब से तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो?
स्मगलिंग, सर! तस्करी!!
उस राक्षस का प्रयोग तस्करी के माल को इधर-उधर पहुंचाने के लिए किया जा रहा है।
शायद तुम ठीक कह रहे हो! राजनगर के सारे तट वैसे भी इस तस्करी के लिए काफी बदनाम हैं।
तो समुद्री राक्षस को पकड़ने के लिए आप क्या करने की सोच रहे हैं?
फिलहाल... कुछ नहीं!
मेरे ख्याल से राक्षस को पकड़ना आसान नहीं होगा! और अगर हम उस तस्कर तक ही पहुंच जाएं, जो समुद्री राक्षस का उपयोग कर रहा है, तो राक्षस अपने-आप ही हमारी गिरफ्त में आ जाएगा!
आप उस तस्कर को जानते हैं क्या?
नहीं! लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि ये सारी तस्करी एक विदेशी जहाज द्वारा की जाती है, जो हमारी समुद्री सीमा के ठीक बाहर अंतर्राष्ट्रीय सागर में खड़ा है।...
हा-हा!!

...हम उसपर बराबर नजर रखे हुए हैं, परंतु फिर भी न जाने कैसे, हमारे शहर में तस्करी का माल लगातार आ रहा है।
आपका शक किस पर है?
रतन बांसुरिया पर! ...
पहले वह बांसुरी बेचकर अपना गुजारा किया करता था। लेकिन पिछले चार सालों में उसने तस्करी से अपार दौलत जमा की है। ...
...दुर्भाग्यवश, हम कभी उसके खिलाफ ठोस सबूत इकट्ठे नहीं कर सके!
शाबास, रामफल! कल सुबह ठीक आठ बजे, एक हजार रुपए तुम्हारे घर पहुंच जाएंगे।
हें हें हें!
हम तो आपके सेवक हैं, बॉस!
और उसी रात भारत की समुद्री सीमा से बाहर अंतर्राष्ट्रीय समुद्र में–
..टर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्र..
SINGAPORE PRIDE
गुड नाइट, मि. बांसुरिया! सॉरी फॉर द ट्रबल। प्लीज डोन्ट माइंड, सर!
कोई बात नहीं, कैप्टेन! धंधे में इतनी तकलीफ तो उठानी ही पड़ती है।

चलो, शकूर!
खामख्वाह ही मुझे फोन कर के बुलाया। अ...
बॉस! सामने कुछ...कुछ हैं!!
तभी समुद्र का अंधेरा नीला रोशनी से चमक उठा –
मुखबिर ने सही खबर दी थी सर! यह रतन बांसुरिया ही है।...
भागने की कोशिश मत करना, बांसुरिया! वर्ना...
...भून के रख दिए जाओगे!?
बांसुरिया की मोटर-बोट एक झटके से मुड़ी-
वह भाग रहा है! ओफ!
पीछा करो!
इसकी मोटर-बोट बहुत शक्तिशाली है। हमारी लांचें इसका पीछा नहीं कर पाएंगी।...
और न ही हमारी गोलियां।
लगता है, आज भी वह बचकर निकल जाएगा!
और तेज शकूर!
और ते ए ए ए sss...
धडाााक

फिर अस्पताल में-
... मैं तुमको ग्यारहवीं बार बता रहा हूं, प्यारे, कि उस जहाज के कैप्टेन ने मुझको रात के खाने पर बुलाया था। यह गैरकानूनी काम तो नहीं है न ?...
...और समुद्री राक्षस जैसी चीज तो मैंने कभी सपने में भी नहीं देखी।
बस, एस॰पी॰ साहब! मैं और पूछताछ की इजाजत नहीं दे सकता!
मैं तो यह सोचकर परेशान हूं कि मेरी मोटर बोट उलट कैसे गई?
रतन बांसुरिया कल से यही राग अलाप रहा है। अगर यह घायल न होता तो ...।
पर यह भी तो हो सकता है, सर, कि वह सच बोल रहा हो।
सवाल ही नहीं उठता, ध्रुव!
तुम देख लेना; तीन दिनों के अंदर ही रतन बांसुरिया अपने पालतू राक्षस के साथ मेरी हिरासत में होगा।
गुड लक, सर!
और एक बार फिर ध्रुव उसी सुनसान और मनहूस तट पर खड़ा था-
मेरे ख्याल से रतन बांसुरिया झूठ नहीं बोल रहा है। वह वास्तव में इस बारे में कुछ नहीं जानता।
इस समस्या की कुंजी समुद्री राक्षस है।
और यह भी पक्का है कि उसका उपयोग तस्करी के माल को इधर-उधर पहुंचाने के लिए किया जाता है।
लेकिन वह इस गुफा में माल लाता कहां से है? यहां तो दूर-दूर तक सिर्फ पानी ही पानी है। सिवाय...

...सिवाय उस पुराने लाइट हाउस के जो अब किसी इस्तेमाल में नहीं आता है! और यह हमारी समुद्री सीमा के बाहर बना है!...
लगता है अब मैं धीरे-धीरे मंजिल तक पहुंच रहा हूं!
और ध्रुव जब अपनी जरूरत की वस्तुएं लेकर वापस लौटा तो शाम का झुटपुटा, रात की कालिमा में बदल चुका था।
वह लाइट हाउस की तरफ बढ़ चला।
यहां पर हमारी समुद्री सीमा खत्म हो जाती है। बेहतर यही होगा कि मैं मोटर-बोट को यहीं छोड़ दूं
और बाकी का रास्ता तैर कर पार करूं!
लगभग बीस मिनट बाद ध्रुव लाइट हाउस पर खड़ा था।
पूरी जमीन कड़े पत्थरों की बनी हुई है।
...यहां पर पैरों के निशान मिलने का कोई चांस नहीं है।
अब जरा इस लाइट हाउस की अंदर से भी छानबीन कर ली जाए!...
...शायद अंदर कोई सूत्र मेरा इंतजार कर रहा हो!..
ध्रुव ने शीघ्र ही पूरा लाइट हाउस ऊपर से नीचे तक छान मारा।
यहां तो कुछ भी नहीं है!!
इसका मतलब है कि माल कहीं और से.... अरे! यह आवाज कैसी है!?

एक मोटर-लांच रात के सन्नाटे को चीरती हुई सुनसान और अंधेरे लाइट हाउस की तरफ आ रही थी–
ये यहां क्या करने आ रही है?
बेहतर यही होगा कि मैं छुप जाऊं।
शीघ्र ही मोटर लांच किनारे आ लगी–
जल्दी माल उतारो, शोल्टी! आजकल यह इलाका खतरनाक हो गया है।
सही कह रहे हो! सुना है कि कोई खूंखार समुद्री राक्षस इस इलाके में कई बार देखा गया है।
मैं तो कहता हूं कि बक्से यहीं रखकर भाग चलो!
क्या!? यानि इन तस्करों का समुद्री राक्षस से कोई संबंध नहीं है। यह केस तो उलझता ही जा रहा है।
हो गया, रॉबर्ट! चलो हमारा काम तो खत्म हुआ।
और साथ में तुम भी!
हैं! क... कौन है यहां?

यह तो एक लड़का है, यार!
ओफ! मैं तो डर ही गया था! भून डालो साले को वर्ना यह हमारा भांडा-
टॉर्च की भरपूर रोशनी लड़के पर पड़ी-
और दोनों तस्करों का डर वापस लौट आया।
य..यह तो सुपर कमांडो ध्रुव.. आह!
सही पहचाना!
लेकिन इस वक्त स्मगलरों के लिए पकड़े जाने का अर्थ था; कम से कम दस साल की जेल!
इसीलिए वे कुछ भी करने को तैयार थे।
चलाओ गोली, शोल्टी!
गोली दगी! लेकिन ध्रुव ऐसी परिस्थितियों से न जाने कितनी बार दो-चार हो चुका था-
धाँय
वह हवा में उछला।
और-
मेरी टॉर्च! आऽऽऽऽऽ

बिना एक भी क्षण खोए ध्रुव का हाथ घूमा—
तड़ाक
टॉर्च और पिस्तौल एक कोने में जा गिरीं।
अरे! अरे! यह क्या कर रहे हो? नीचे उतारो। मुझे नीचे उतारो।
अभी लो।…
जमीन पर गिरने से तुम्हें चोट लग जाएगी। इसीलिए…
तुम अपने दोस्त का इस्तेमाल करो। आखिर दोस्त ही दोस्त के काम आता है।
बस! बस, मेरे बाप! अब तो सारे बदन की हड्डियां अस्पताल का रास्ता पूछ रही हैं।
अगर तुम अपने होश में ही अस्पताल पहुंचना चाहते हो तो जो मैं पूछूं, तुम शांति से बताते जाओ।
मैं बिना पूछे ही बता देता हूं! वरना तुम फिर मार-पीट कर पूछोगे।…हम नशीली वस्तुओं की तस्करी करते हैं।…
…हमारा माल सिंगापुर से जहाज द्वारा, वाटरप्रूफ बक्सों में पैक होकर आता है।…

..हमारा जहाज भारत की समुद्री सीमा के ठीक बाहर खड़ा रहता है। हमारा काम मोटर-लांच से माल यहां तक छोड़ जाना है।...
...आगे इस माल का क्या होता है?, हमको नहीं पता। चाहे जिसकी कसम खिला लो।
इसकी जरूरत नहीं है। मेरे सामने अपराधी सिर्फ सच ही बोलते हैं। परंतु एक बात का मुझे अफसोस है, दोस्तो!
कि...किस बात का?
कि मुझे अपना वादा तोड़ना पड़ेगा! तुम होश में अस्पताल नहीं पहुंच पाओगे!
बिजली को भी मात देने वाली गति से ध्रुव के दोनों हाथ उठे।
एक-एक वार ही दोनों को सपनों की दुनिया में पहुंचाने के लिए काफी था।
ये दोनों तो गए! अब मैं अगर इनको पुलिस के हवाले करूंगा तो इनके साथी सतर्क हो जाएंगे।...
और फिर हमको यह कभी पता नहीं चल पाएगा कि ये माल हमारे देश के अंदर कैसे पहुंचता है!
लेकिन इनको यहां पर ऐसे छोड़ा भी तो नहीं जा सकता। अब ?? ...आइडिया
इनको छुपाने के लिए इससे बढ़िया जगह हो ही नहीं सकती!!

और पांच मिनट बाद ध्रुव लाइट हाउस के टॉवर पर बैठा था –
अब देखूं कि इस माल को लेने कौन आता है?
ध्रुव को ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा। शीघ्र ही एक विशालकाय आकृति समुद्र से निकलकर लाइट हाउस की तरफ बढ़ रही थी–
यह तो वही समुद्री-राक्षस है!
यानि मैं सही लाइन पर सोच रहा हूं।
दैत्य थोड़ी देर तक बक्सों के पास रुका–
न जाने क्यों; आज उसे कुछ शक हो रहा था।
लेकिन आखिरकार उसने वाटरप्रूफ बक्सों की खिलौनों की तरह बगल में दबाया –
और वापस समुद्र में घुसने लगा।
एक मिनट बाद एक और आकृति पानी में कूदी–
ये राक्षस ही मुझको उस दूसरे राक्षस तक पहुंचाएगा जो नशीले पदार्थों के जरिए हमारे युवाओं के दिमाग को खोखला कर रहा है।
शीघ्र ही–
वह रहा राक्षस! लेकिन यह तो दो बक्सों के भार के बावजूद काफी तेजी से तैर रहा है।...
...मैं तैरकर इसका पीछा नहीं कर पाऊंगा।

अगले ही पल ध्रुव ने एक पिस्तौल-नुमा हथियार अपने भागते शिकार पर ताना –
इससे निकलने वाला माइक्रो-ट्रांसमीटर, राक्षस के शरीर में चिपक कर मुझे सिग्नल भेजता रहेगा, और मुझे बिना इसका पीछा किए पता...
ओह!
इससे पहले कि माइक्रो-ट्रांसमीटर राक्षस तक पहुंच पाता।
एक बड़ी मछली राक्षस के आगे आ गई।
और–
ट्रांसमीटर मछली पर चिपक गया!!! इस को कहते हैं खराब किस्मत !!
...लेकिन मैं भी तो गधा हूं! अगर मैं यह ट्रांसमीटर पहले ही बक्सों पर चिपका देता, तो यह नौबत ही क्यों आती!
...लेकिन मुझे भी क्या पता था कि वह राक्षस स्पीड-बोट से भी तेज तैरता है!
अब तो वह भी नजरों से ओझल हो चुका है!
...लेकिन वह भागकर जाएगा कहां मेरे चंगुल से?...
माल रखने तो वह उस गुफा में ही जाएगा! मैं उसका पीछा वहां से दोबारा कर सकता हूं!

और यहीं पर ध्रुव गच्चा खा गया, क्योंकि गुफा में -
कुछ नहीं है !?
--उस राक्षस को माल लेकर यहां पर कम से कम दस मिनट पहले पहुंच जाना चाहिए था।
लेकिन अगर वह यहां नहीं आया ...तो वह आखिर गया कहां?
...और मैं घूम-फिर कर वापस वहीं आ गया। अब अगर एक घंटे के अंदर-अंदर मैंने अपराधियों को न पकड़ लिया तो सारा खेल चौपट हो जाएगा।
एक घंटे के अंदर !? ऐसा क्या हो गया है ?
एक घंटा तो यह समझाने में ही निकल जाएगा। पुलिस हैडक्वार्टर से कोई खबर आई है क्या ?
हां! रतन बांसुरिया ने बयान दिया है कि सिंगापुर प्राइड के कैप्टेन ने उसे फोन द्वारा सौदा करने के लिए बुलाया था।--
...लेकिन सौदा पटा नहीं, और वापिस आते समय उसे पुलिस और तट-रक्षकों ने पकड़ लिया।...
...लेकिन समुद्री-राक्षस के बारे में कुछ भी जानने से उसने साफ इंकार कर दिया!
ओफ! यह सब तो मैं पहले भी सुन चुका हूं। इन में कोई बात भी ऐसी नहीं है जो अपराधी तक पहुंचने में मेरी मदद कर सके।
ऐसे हिम्मत मत हारो, ध्रुव!--

तुम इस केस के बारे में एकदम शुरू से सोचो। कहीं न कहीं ऐसा कोई सूत्र जरूर होगा, जिसे तुम नजरअंदाज कर गए हो!
हुम! शायद तुम ठीक कह रही हो! देखो...
सबसे पहले मैं दोनों लाशों को देखने उस तट पर गया! उस वक्त एस॰पी॰ साहब ने मेरी बात नहीं मानी। इसलिए मैं और सबूत ढूंढने उस शाम मछुआरों की बस्ती में गया।
उनसे बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि मशहूर समुद्र-शास्त्री प्रो॰पाटिल का बंगला वहीं पास में है!...
...मैं प्रो॰पाटिल से मिलने उनके बंगले जा पहुंचा! थोड़ी... अर... मुश्किल के बाद मेरी उनसे मुलाकात हुई! वे अपने इनडोर स्विमिंग पूल के बगल में बैठे अखबार पढ़ रहे थे!...
...उन्होंने ऐसे जीव का अस्तित्व होना असंभव बताया!...
...फिर मैं तुम्हारे और पीटर के साथ उसी सुनसान तट पर पहुंचा! वहां पर मैं... वो मारा! रेणु, यू आर ए जीनियस!
म... मैंने क्या किया?
तुमने मुझे वह रास्ता दिखाया, जिसने मुझे मंजिल तक पहुंचा दिया!
पर हम जा कहां रहे हैं?
ऐसे आदमी के पास, जो हमें असली अपराधी के दर्शन कराएगा!
बाकी बातें मैं तुमको रास्ते में बताता चलता हूं! ध्यान से सुनो...

और शीघ्र ही–
यह हम कहाँ आ गए, ध्रुव ?
प्रोफेसर पाटिल के बंगले पर।
देखो! सामने ग्लास पार्टीशन के पार प्रो॰ पाटिल स्वीमिंग पूल के पास बैठे हुए हैं।...
...तुम यहीं मेरा इंतजार करो! और जरूरत होने पर ही अंदर आना, वर्ना नहीं!
बाकी सारी स्कीम तो ठीक से समझ ली है न ?
तुम फिक्र मत करो! मैं तुम्हारा खेल नहीं बिगाड़ूंगी।
अंदर–
अरे ध्रुव! आओ, आओ! नाश्ता करो! मैं नाश्ता ही करने जा रहा था। सुबह-सुबह क्या काम आ पड़ा मुझ गरीब से ?
मैं आपसे कुछ मांगने आया हूं, प्रोफेसर!
मांगने? अरे, हुक्म करो।...
तुम जैसे देश-भक्त पर तो मैं जान भी निछावर कर सकता हूं!
जान फिर कभी ले लूंगा!
फिलहाल तो मुझको...
ये दोनों वाटरप्रूफ बक्से चाहिए!
बक्से!?
हां! तुम्हारी टेबल के किनारे पड़े पानी ने मुझको खुद ही बता दिया कि दोनों बक्से इस वक्त कहां पर हैं!
यानि तुम, न जाने कैसे, मेरा राज़ जान गए हो। तो, बच्चे, तुम यह भी जानना चाहते होगे कि वह समुद्री राक्षस इस वक्त कहां पर है! लो, देखो!
प्रो॰ पाटिल ने चुटकी बजाई।

स्वीमिंग पूल के तल में बने मेन होल का ढक्कन एक तरफ सरक गया–
?
-और उस में से एक भयंकर आकृति प्रगट हुई।
इससे पहले कि ध्रुव अपनी पलकें तक झपका पाता–
आऊ! ठीक वैसा ही हो रहा है–
धाड़
जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था! गॉड!
धड़ाक
दैत्य ने ध्रुव को संभलने का मौका तक नहीं दिया–
ध्रुव मुसीबत में फंस गया है! मुझे उसकी मदद...
नहीं! वह मुझे रुके रहने का इशारा कर रहा है।
मैं तुमको खत्म करना नहीं चाहता, दोस्त! अगर तुम मेरा साथ दो तो जान भी बचा लोगे और... माल भी कमा लोगे!
वर्ना मेरा पालतू जानवर तुम्हारे इतने टुकड़े कर देगा कि गिनना मुश्किल हो जाएगा!
न मानने के अलावा कोई चारा भी तो नहीं है! पर दोस्ती के नाते एक बात तो बताओ, पाटिल, कि यह अजूबा तुम ले कहां से आए?
जापान से! माउंट यानो-हाका नामक ज्वालामुखी के पास के समुद्र से!...

उस वक्त मैं ज्वालामुखी के आस-पास के समुद्री क्षेत्र में, समुद्री जीवन पर छानबीन कर रहा था। इससे मेरी वहीं पर मुलाकात हुई।
ज्वालामुखी की रहस्यमय गैसों के कारण ही इस विशाल, भयानक और बुद्धिमान जीव का जन्म हुआ। इसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता था–
धीरे-धीरे हम दोस्त बन गए। जब मुझको यह पता चला कि यह पानी से बाहर भी जिंदा रह सकता है, तो उस रात मेरी बोट का कैप्टेन मेरे पास आया।
...उसने मेरे सामने इस जीव के जरिए नशीले पदार्थों की तस्करी की पेशकश की। मुझे भला क्या एतराज होता? मैं तुरंत मान गया।
उसी कैप्टेन के जहाज द्वारा मैं इसको भारत ले आया। वह कैप्टेन माल को भारत की समुद्री सीमा के बाहर बने लाइट-हाउस में रखवा देता था और वहां से मेरा पालतू जीव माल को मेरे पास ले आता था।
वाह, पाटिल! पर तुमने इसको पालतू कैसे बनाया?
यह पता लगाकर, कि यह क्या खाता है। यह एक ऐसी दुर्लभ समुद्री सिवार का रस पीता है, जो सिर्फ माउंट यानो हाका के आस-पास के समुद्र में ही पाई जाती है।
...लेकिन मैंने इसको रसायनों की मदद से प्रयोगशाला में ही तैयार कर लिया है। देखो...
समुद्री राक्षस का सारा ध्यान अब अपने भोजन पर केन्द्रित हो गया–
ध्रुव के बदन पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।
और ध्रुव ने इसका पूरा फायदा उठाया और–
तड़ाक
घाटा भी! क्योंकि राक्षस के शरीर से टकरा कर जार प्रो॰ के हाथ से फिसल गया।

शीशे का जार जमीन से टकराकर चूर-चूर हो गया—
छनाक
समुद्री राक्षस के क्रोध में मानो घी पड़ गया।
भागो, प्रोफेसर! इसके लिए तुरंत दूसरे जार का इंतजाम करो!
लेकिन यह आखिरी जार...
थाऽऽऽऽऽ
चटाक
हालांकि यह बचाने लायक नहीं है, लेकिन फिर भी इसको पुलिस के हाथों जिंदा सौंपना जरूरी है।
मामला गड़बड़ है! लेकिन ध्रुव ने मुझे अंदर आने का इशारा नहीं किया है!
लेकिन लगता है कि पुलिस पार्टी को सिग्नल भेजने का समय आ गया है।
तुम इसको रोक नहीं पाओगे, ध्रुव!
नहीं, प्रोफेसर!
यह जितनी देर पानी से बाहर रहता है, इसकी ताकत उतनी ही कम होती जाती है।
अगर मैं इसको स्वीमिंग पूल में वापस कूदने से रोक सकूं...
तो मैं इसपर काबू पा लूंगा!...
लेकिन इस बार समुद्री दानव को पानी से बाहर निकले हुए ज्यादा वक्त नहीं हुआ था—
आह!
और भूख ने उसके क्रोध को और ज्यादा भड़का दिया था।

अब पिस्तौल का इस्तेमाल करने के अलावा और कोई चारा नहीं है।
वर्ना मैं या प्रोफेसर, कोई भी जिन्दा नहीं बच पाएगा।
लेकिन समुद्री-राक्षस की फुर्ती और लंबी पहुंच के आगे ध्रुव की एक न चली –
उम्मीद की आखिरी किरण भी खत्म हो गई।
अब मैं इसको स्वीमिंग पूल में कूदने से नहीं रोक सकता।
आह!
समुद्री-राक्षस पानी की ओर बढ़ा –
परंतु अब रेणु का धैर्य समाप्त हो चुका था।
वह शीशा टूटने की कर्णकटु आवाज सुन-कर पलटा –
मेरा पहला काम इसको स्वीमिंग-पूल में कूदने से रोकना है।
और अगले ही पल रेणु ने मोटरसाइकल को गिरा दिया –
टंकी से पेट्रोल तेजी से बहकर बाहर आने लगा।
आग का एक छोटा सा अंगारा भी अब बहुत था –
शाबास, रेणु!

यह आग के पार कूदने की कोशिश नहीं करेगा। सभी जानवर आग से डरते हैं।...
...अब मैं इसपर काबू पा सकता हूं।
ध्रुव अपनी सारी शक्ति समेटकर दैत्य पर टूट पड़ा–
धाड़
ध्रुव के शक्तिशाली वारों और आग के बीच घिरे, राक्षस के दिमाग ने काम करना बंद कर दिया–
उस की शक्ति क्षीण हो रही थी।
थकान से उसके पैर लड़खड़ाए और वह आग में आ गिरा
आााऽऽऽ
ओह! यह क्या हुआ? इस दुर्लभ जीव को बचाना बहुत जरूरी है।
ध्रुव अपनी जान पर खेलकर आग में घुस गया।
और एक सधे हुए वार से समुद्री राक्षस स्वीमिंग पूल में लुढ़क गया–
तड़ाक
हिस्स्स्स
भाप के बादल चारों तरफ छा गए।
लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। समुद्री राक्षस मर चुका था–
यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है, पाटिल। तुम्हारे नीच कामों में साथ देने के कारण ही इस दुर्लभ जीव को जान गंवानी पड़ी!

यह सब क्या हो रहा है, ध्रुव?
आइए, सर! इनसे मिलिए! ये हैं प्रोफेसर पी॰पी॰ पाटिल! आपके असली मेहमान!
य..यह झूठ बोल रहा है, एस॰पी॰ साहब! मेरा इन बक्सों में भरी ब्राउन शुगर से कोई वास्ता नहीं है।...
...यह लड़का मुझ को फंसाने के लिए खुद ही इन बक्सों को लेकर यहां आया था।
शांत, प्रोफेसर! शांत!!
यह तुमसे किसने कहा, पाटिल कि इन बक्सों में ब्राउन शुगर भरी है?
त..तो इनमें क्या है?
इन में हैं...
...तुम्हारे काले कारनामों के दो गवाह!...
रॉबर्ट और शोल्टी!
...ब्राउन शुगर तो वहीं पुराने लाइट हाउस में रखी है!
अब समझीं, रेणु, कि मेरे पास सिर्फ एक घंटे का समय क्यों था? घंटे भर में बक्से में बंद रॉबर्ट और शोल्टी होश में जरूर आ जाते।
फिर ये पाटिल को सब कुछ बता देते। और हमारे पहुंचने से पहले...
...ये लोग सारे सबूतों को ठिकाने लगा देते।
प्रो॰ पाटिल ने भी समझ लिया था कि अब निर्दोष होने का ढोंग करना बेकार है।
यह बंगला और स्वीमिंग पूल मैंने खास तौर से तस्करी के लिए बनवाया था।...
...मुझे पता था कि उस सुनसान तट से, दो भूमिगत सुरंगों के जरिए, समुद्र के पानी की दो झीलें, अलग-अलग स्थानों पर बनी हुई हैं।...

Printed at: Japan Art Press